ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 28 कुल पृष्ठ-8 1 से 7 मार्च, 2018 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 फा. शु.-14

आर्य समाज दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली में होली मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित

बढ़ते हुए धार्मिक पाखण्ड को चुनौती देने के लिए आर्य समाज आगे आये

– स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने से ही बनाया जा सकता है

– आर.एस. तोमर एडवोकेट

अनेक आन्दोलनों का साक्षी रहा है आर्य समाज दीवान हाल

– वैद्य इन्द्रदेव

दिल्ली की ऐतिहासिक आर्य समाज दीवान हाल, चांदनी चौक के तत्वावधान में 25 फरवरी, 2018 को होली मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें आर्य समाज के अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। वैदिक विद्वान आचार्य विद्युत शास्त्री एवं विदुषी गरिमा शास्त्री ने यज्ञ का बड़ी कुशलता के साथ संचालन करते हुए उपस्थित सैकड़ों आर्यजनों से आहुति दिलवाकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का संकल्प करवाया। इस यज्ञ में मुख्य यजमान आर्य समाज के मंत्री श्री तेजपाल मलिक सपत्नीक रहे। इस पूरे कार्यक्रम का मुख्य संयोजन प्रसिद्ध आर्यनेता वैद्य इन्द्रदेव आर्य ने किया। वैद्य जी ने अपने संक्षिप्त सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज दीवान हाल अनेक आन्दोलनों का साक्षी रहा है और यहीं से हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन एवं गौरक्षा आन्दोलन जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के आन्दोलनों का सूत्रपात तथा संचालन आर्य समाज की महान विभूतियों ने किया था। वैद्य जी ने अपने ओजस्वी शब्दों में आर्य समाज दीवान हाल के स्वर्णिम इतिहास पर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हुए आह्वान किया कि हमें आर्य समाज के कार्यों को अब तीव्र गति से शुरू करना चाहिए। वैद्य इन्द्रदेव जी ने इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट का शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। वैद्य जी ने स्वामी आर्यवेश जी के सम्मान में बोलते हुए कहा कि यह हम सभी का सौभाग्य है कि स्वामी आर्यवेश जी जैसे तेजस्वी एवं तपस्वी संन्यासी का नेतृत्व आर्य समाज को प्राप्त है। वे वर्तमान में आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं। वैद्य जी ने बड़े गर्व के साथ कहा कि स्वामी आर्यवेश जी वर्तमान में जिस कुशलता एवं कर्मठता के साथ

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में जुटे हुए हैं उससे आर्य समाज का भविष्य निश्चित रूप से हमें उज्ज्वल प्रतीत होता है।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्यजनों को नवसंस्येष्टि (होली) पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर गौरक्षा आन्दोलन तक जितने भी राष्ट्रीय स्तर के आन्दोलन एवं अभियान देश में चले उन सभी का संचालन आर्य समाज दीवान हाल से हुआ। स्वामी जी ने बताया कि इस आर्य समाज का अपना स्वर्णिम इतिहास है और वैद्य प्रहलाद दत्त आर्य, लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती), आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री ओम प्रकाश त्यागी, डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री सूर्यदेव आर्य प्रभृत्ति नेताओं का संरक्षण एवं सान्निध्य प्राप्त हुआ है और देश–विदेश में इस आर्य समाज की विशेष ख्याति रही है। स्वामी जी ने समाज को पुनः सक्रियता एवं सजीवता प्रदान करने के लिए समाज के समस्त पदाधिकारियों को प्रेरित एवं उत्साहित किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जिस प्रकार से पाखण्डी बाबाओं एवं तथाकथित धर्मगुरुओं की ढोल की पोल खुलती जा रही है उससे आर्य समाज के प्रति जनता का आकर्षण एवं विश्वास बढ़ा है। धर्म के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से लोग ऊबते जा रहे हैं और ऐसी स्थिति में आर्य समाज को और अधिक सक्रिय होकर देश की जनता का नेतृत्व करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज को बढ़ती हुई नशाखोरी, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, महिला उत्पीड़न (कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात्कार आदि), जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं शोषण आदि ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान चलाना चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज को उपयोगी आर्य समाज के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए सामान्य जनता से आर्य समाज की गतिविधियों से जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लोगों की समस्याओं एवं दुःख–दर्दों को मिटाने के लिए आर्य समाज अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाये। यह समय की माँग है। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उपरोक्त ज्वलन्त मुद्दों पर राष्ट्रव्यापी अभियान चला रही है तथा विभिन्न प्रान्तों में इस दिशा में ठोस कार्य हो रहा है। आर्य समाज दीवान हाल में आयोजित आज के सफल कार्यक्रम के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यनेता वैद्य इन्द्रदेव आर्य, समाज के प्रधान मेजर डॉ. रविकान्त एवं उनकी समस्त कार्यकारिणी को बधाई दी और समाज को सक्रिय करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में विदुषी आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या के मधुर भजनों का कार्यक्रम भी हुआ। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज का भी विशेष आयोजन समाज की ओर से किया गया था। कार्यक्रम की व्यवस्था में समाज के प्रधान मेजर डॉ. रविकान्त, श्री आदित्य आर्य, श्री तेजपाल मलिक, धर्माचार्य विद्युत शास्त्री आदि ने विशेष पुरुषार्थ किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश, श्री गणेश वेदालंकार, श्री उमेश गुप्ता, श्री रणवीर सिंह शास्त्री–बवाना, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया, श्री के.के. सेठी प्रतापनगर, सेठ जगदीश प्रसाद घी वाले आदर्श नगर, श्री रामनिवास एडवोकेट ग्रीन पार्क, श्री पतराम त्यागी शकरपुर, प्रो. यशवीर आर्य, श्री रामकुमार आर्य दुर्गापुरी, श्री महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक वैद्य इन्द्रदेव आर्य ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) के जन्मदिन व आर्य महासम्मेलन के विषय में

अपने आत्मीयजनों से, प्रियजनों से, अपने कृपालु सहयोगियों से, अपने तारनहारों से

हृदय की गहराई से निवेदन

मेरे प्रियजनो– पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने इस दुर्लभ, साधनहीन, पर्वतीय प्रदेश में इस संस्थान को बनाने में घोर श्रम किया। बहुत बड़ा तप किया, रात–दिन गहन साधना की, तब जाकर इसका वर्तमान स्वरूप निखर कर सामने आया। उनके सामने यह सब करने के लिए एक ही लक्ष्य था। उनका एक ही ध्येय था कि इस पहाड़ी क्षेत्र में महर्षि का एक ऐसा संस्थान हो जिसे देखने देश–विदेश से सैलानी आएँ। जो महर्षि के आदर्शों का कीर्ति का स्तम्भ हो, जिसमें से प्राचीन व नवीन आश्रमों की आदर्श झलक देखने को मिले। वैदिक संस्कृति की धारा जहाँ बह रही हो। यज्ञों व सत्संगों से जहाँ का वातावरण आह्लादकारी हो। जहाँ के तप व साधना के अणु व परमाणु पूत व पवित्र करने वाले हों। जहाँ जाने पर अलौकिक शान्ति प्राप्त होती हो। जिसकी भूमि पर पदार्पण करते ही अपार आनन्द की प्राप्ति होती हो। जहाँ के शुद्ध वातावरण में देवजन, पितृजन, दिव्यात्माएँ प्रसन्न मुद्रा में उन्मुक्त भाव से विचरण करते हों। जहाँ से अग्नि में दिव्यजनों को प्रदत्त आज्य व हव्य की उठ रही प्रचुर सुगन्धि से दिशाएँ–उपदिशाएँ सुगन्धित हो रही हों। जहाँ से बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों के सुगन्धित व रोगनाशक धूम से द्युलोक व अन्तरिक्ष लोक खचाखच भरे जा रहे हों। जहाँ से वेद मन्त्रों की गूंज से व्योममंडल गुंजायमान हो रहा हो। जो संस्थान ध्वनि प्रदूषण व वायु प्रदूषण को दूर करने वाला एक बहुत बड़ा केन्द्र हो। पूज्य स्वामी जी ने इसके लिए बहुत प्रयास किया। अपने प्रयास में वे काफी हद तक सफल भी रहे। परन्तु उतनी सफलता उन्हें नहीं मिल पाई जिसकी वे कामना करते थे। **कारण**– अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ पर चार गुणा अधिक श्रम करना पड़ा, व्यय करना पड़ा। जैसे पहाड़ी सफर कठिन होता है, उसमें अधिक समय लगता है, यह सफर थकान भरा होता है। कठिनाईयों से भरा होता है। शंसयशील होता है, ठीक उसी प्रकार यहाँ कार्य करना भी महान श्रम साध्य व व्यय साध्य होता है। यही कारण है कि पूज्य स्वामी जी अपने स्वप्नों को रंगने में लगे रहे, लम्बे समय तक लगे रहे। उन्हें सजाने में लगे ही थे कि कब जीवन की सांझ आ गयी पता भी न चला। भविष्य का ताना बाना बुनते–बुनते वह प्रखर किरणों वाला सूर्य समय के साथ–साथ तेजहीन होता हुआ अस्ताचल को चला गया। हम सभी लोग इस अकल्पनीय, अशोचनीय स्थिति से हतप्रभ रह गए। हमारे सामने सहसा ही घटाटोप क्रूर रात्रि का अन्धेरा छा गया। कुछ समय हम लोग दुःख व पीड़ा के बस घटाटोप अन्धेरे में दुबके रहे। आखिर कब तक– पूज्य चरणों ने शक्ति दी, सत्प्रेरणा रूपी रोशनी दी और हम अकस्मात् ही आ पड़ी जिम्मेवारियों को निभाने के लिए उठ खड़े हो गए। आप लोगों से सहारा मिला और हम लड़खड़ाते, बलखाते निकल पड़े पूज्य चरणों के कार्यों को आगे बढ़ाने।

प्रियजनों दैनिक कार्य प्रभु कृपा से, पूज्य चरणों के आशीर्वाद से और आप सभी के सहयोग से निरन्तर चल रहे हैं। थोड़ी बहुत जो आर्थिक कमी कभी–कभी बीच में आ खड़ी होती है उसे भी परम कृपालू प्रभु व पूज्य चरण किसी न किसी तरह दूर कर देते हैं। दैनिक दिनचर्याओं की गाड़ी चल ही रही है, पर क्या हमने इतने से ही सन्तोष कर लेना है क्या–2 नहीं। पूज्य स्वामी जी के अधूरे स्वप्न हमारे सामने हैं जो अधरंगे हैं जिन्हें रंगने के लिए घोर श्रम व परिश्रम की जरूरत है। पूज्य स्वामी जी के साथ–साथ आप सभी का भी बहुत बड़ा योगदान है इस संस्था को यहाँ तक पहुँचाने में। आप सभी भी तो पूज्य स्वामी जी के कार्यों के साक्षी हैं। अतः पूज्य स्वामी जी के बाद उनके वह स्वप्नों का संसार वीरान न हो जाए। उनकी स्मृति समय के साथ–साथ धुन्धली दर धुन्धली होती हुई सर्वथा लुप्त न हो

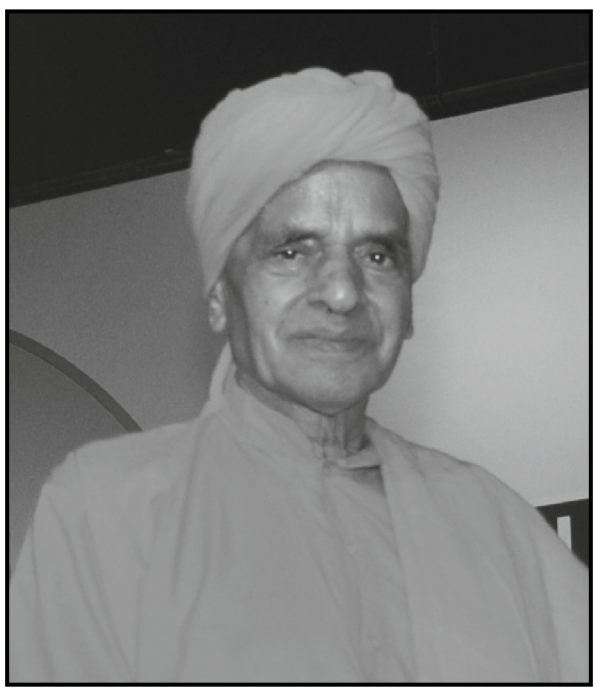

जाए। अगर ऐसा होता है तो बहुत बड़ा अन्याय होगा उनके प्रति। बहुत बड़ा पाप हो जाएगा हमारे द्वारा। आगे से क्योंकर समाज में ऐसी आत्माएँ पैदा होंगी, जो देश, जाति व समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाली होंगी। क्योंकर कोई प्राणीमात्र के कल्याण हेतु अपने जीवनों को शंसय में डालेंगें। क्योंकर कोई समाजकल्याण, जनकल्याण के ऐसे कार्यों को आरम्भ करेंगें जिनके विषय में उन्हें लगेगा कि हमारे बाद यह कार्य आगे नहीं बढ़ेगें, ठप्प हो जाऐंगें। प्रिय बन्धुओं आगे अब जो हमारा कर्त्तव्य बनता है उसे हम सब मिलकर निभाएँ यही हम सबका कर्त्तव्य भी है और धर्म भी है।

मैं चाहता हूं– यह संस्थान जन–जन के आकर्षण का केन्द्र बने। यहाँ पर वह सब कार्य होते रहें जिन कार्यों को पूज्य स्वामी जी करते रहे। देश–विदेश के लोगों की इस संस्था के प्रति रूचि बने। एक बार जरूर–जरूर यहाँ आने की तमन्ना जगे। यह संस्थान आर्यों का ही नहीं दुनिया भर के लोगों के लिए एक भव्य, आकर्षक, पापनाशक, दोषों को धोने वाला तीर्थस्थान बने जैसा कि पूज्य स्वामी जी की हार्दिक चाहना थी।

इसलिए– यज्ञों की पावन परम्परा यहाँ पर अधिकाधिक रूप से चलनी चाहिए। सत्संगों व वैदिक विचारधारा की पापनाशनी, शुद्ध व पवित्र करने वाली गंगा यहाँ बहती रहे। दीनों, दुःखियों की सहायताएँ यहाँ पर होती रहे। निर्धन कन्याओं की शादियों में बढ़–चढ़ कर योगदान दिया जाता रहे। संस्थान की भव्यता दिनोंदिन बढ़ती रहे। जिन सबके लिए पूज्य चरण जीवन पर्यन्त यत्नशील रहे, जिन्हें करते रहे।

इसके लिए– आप सबका सहयोग आवश्यक है। मैं अकिंचन हूँ। सामर्थ्यहीन हूँ। कुछ पूँजी मेरे पास है तो वह है परम कृपालू की अपार कृपा, दिव्यात्माओं व पूज्य चरणों का आशीर्वाद तथा आप सभी की मंगलकामनाएँ तथा सहयोग जिनके बल पर मैं खड़ा हूँ। अब इन सब की मुझे और भी अधिकाधिक रूप से आवश्यकता है। शारीरिक रूप से भी, आर्थिक रूप से और आशीर्वादों व मंगलकामनाओं के रूप से भी

इस बार– पूज्य स्वामी जी के जन्मदिन जो कि 5 मई को आता है, को हम आर्य महासम्मेलन के रूप में मनाने का मन बना रहे हैं। पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, पूज्य स्वामी सवितानन्द जी के दिशानिर्देश में यह सम्मेलन होगा। वे महापुरूष ही इसकी कार्य योजना बना रहे हैं। दूरभाष से पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने 5 व 6 मई यह दो दिन इसके लिए निश्चित करने के लिए हमें कह दिया है। विस्तृत कार्य योजना बाद में आप लोगों को भेज दी जाएगी। तब तक आप लोग इस कार्यक्रम में **मनसः वाचः कर्मणाः** शामिल होने का मन बना लें।

इसमें– सहयोगियों की बहुत बड़ी फौज चाहिए। कार्यकर्ताओं का बहुत बड़ा दल चाहिए।

जो– अन्न से, धन से व सेवा के कार्यों से इस कार्य को सफल करने में अपना पुनीत धर्म निभायेंगें।

अगर– हमारा यह प्रथम प्रयास सफल हो जाता है तो समय–समय पर इस प्रकार के आयोजनों को करने के लिए हमारा उत्साह और बढ़ जाएगा।

और– इन्हीं कार्यक्रमों में शामिल होने की उत्कंठा को लिए श्रद्धालुजन यहाँ आना शुरू हो जायेंगें। यहाँ पर श्रद्धा से, आस्था व निष्ठा के साथ किए जा रहे यज्ञों में प्रक्षिप्त आहुतियों से तृप्त देवजन, पितृजनों के अमोघ आशीर्वादों से सफल मनोरथों के साथ घरों को लौटेंगें तो बन गया न यह संस्थान तीर्थस्थल।

जिसका– पूज्य चरण हर समय स्वप्न देखा करते थे। जिसका उल्लेख अपने उद्बोधनों में प्रायः किया करते थे।

हम भी– पूज्य चरणों के इस बहुप्रतीक्षित कार्य को करके जहाँ हम अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन कर पुण्य के भागी बनेंगें, वहीं पूज्य चरणों को उनके मिशन को आगे बढ़ाकर उन्हें अपार तृप्ति व सन्तुष्टि प्रदान करेंगें, साथ ही दिव्यजनों के लिए सुन्दर वातावरण, उनके लिए आवासीय सुन्दर माहौल बनाकर उनके कृपा भाजन भी बनेंगें। आम के आम गुठली के दाम। मैं आप लोगों से विनीत आग्रह कर रहा हूँ।

आईये – हम सब मिलकर पूज्य स्वामी जी महाराज के जन्मदिन के पुनीत अवसर पर इस आर्य महासम्मेलन को हर प्रकार से सफल बनाने में पूरी शक्ति लगा दें। ईश्वर हमारे साथ है, पुण्यात्माएँ हमारे साथ हैं, पूज्य चरणों की छत्रछाया निरन्तर हमारे ऊपर है सफलता अवश्य मिलेगी।

आगे भी– इस प्रकार के कार्यक्रमों की तारतम्यता निरन्तर बनी रहनी चाहिए। एक बार नहीं बार–बार। वर्षभर में कुछ न कुछ इस प्रकार की गतिविधियाँ यहाँ निरन्तर चलती रहनी चाहिए। ईश्वर इसके लिए हमें भरपूर शक्ति दे। इन्हीं अभिलाषाओं को लिए। **आप सभी का प्रियपात्र**

– आचार्य महावीर सिंह

स्वामी दयानन्द जी ने तेजस्वी राष्ट्र निर्माण की नींव डाली

बनारस में स्वामी दयानन्द जी का

194वाँ जन्मदिवस समारोह उत्साह के साथ मनाया गया

19वीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द जी ने देशवासियों को वेदों का प्रकाश देकर अन्धकार से बाहर निकाला और तेजस्वी राष्ट्र निर्माण की नींव डाली। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने दयानन्द जयन्ती के अवसर पर काशी आर्य समाज बुलानाला में बतौर मुख्यअतिथि व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने की। इस अवसर पर आर्य विद्वान् पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में बताया कि स्वामी दयानन्द के सामाजिक जागरण, स्वदेशी व स्वभाषा उत्थान के आह्वान को अंग्रेजों ने भारतीयों में राजनीतिक चेतना के उभार के रूप में अनुभव किया था।

इस अवसर पर पूर्व सभासद श्री लीलाराम सचदेवा, श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमंत्री डॉ. विशाल सिंह, श्री विवेक सिंह एडवोकेट, डॉ. गायत्री आर्या व प्रतिभा सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने निम्न वर्गों तथा महिलाओं को वेदाध्ययन का अधिकार दिया तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए कठिन परिश्रम किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से किया गया। तदुपरान्त सर्वश्री मोतीलाल आर्य, रमेश जी आर्य, लल्लन आर्य ने सुमधुर गीतों व भजनों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। डॉ. विशाल सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया तथा संचालन श्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया।

– प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व | 81वें जन्मदिवस पर विशेष | कीर्तिर्यस्य स जीवति

आर्य राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा स्वामी इन्द्रवेश जी

– स्वामी आर्यवेश

जन्म–१३ मार्च, १९३७
जन्मस्थान–ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता– श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :–

सन् १९६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १९६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १९६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १९६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १९६९ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १९७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१९७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १९७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १९७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १९७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १९७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १९८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १९८६ में राजीव–लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १९६२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १९६३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :–

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य–व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम–प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १९७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला

रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १९८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओम्वेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगड़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने–अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १९८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १९८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १९९९ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

९. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १९८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १९९७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधयक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओम्वेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन–रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक–एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथ पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

आर्य समाज मयूर विहार फेस–1, नई दिल्ली का 35वाँ वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

समापन समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

आर्य समाज मयूर विहार फेस–1, नई दिल्ली का 35वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 21 से 25 फरवरी, 2018 तक आयोजित किया गया। जिसका समापन 25 फरवरी को को दोपहर 2 बजे हुआ। उत्सव में प्रसिद्ध युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में विराजमान रहे तथा अपने विद्वतापूर्ण प्रवचनों से जनता को लाभान्वित किया। उनके अतिरिक्त विदुषी आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने अपने मधुर भजनों से कार्यक्रम को वेदमय बना दिया।

उत्सव के समापन समारोह 25 फरवरी, 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने व्याख्यान में श्री धर्मपाल आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते हुए आर्षग्रन्थों के स्वाध्याय करने पर बल दिया।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि जिस प्रकार स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी ने धर्म के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जैसे सूर्य निकलने पर उसके प्रकाश एवं उसकी गर्मी से पता लग जाता है कि सूर्य निकल चुका है उसी प्रकार एक धार्मिक व्यक्ति के व्यवहार से यह मालूम पड़ना चाहिए कि वह व्यक्ति धार्मिक है और धर्म उसके जीवन में व्यवहार से परिलक्षित हो रहा है। स्वामी आर्यवेश जी ने वर्तमान में धर्म के नाम पर चल रहे समस्त पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को वेद विरुद्ध बताया और कहा कि जब तक दुनिया के लोग वेदानुकूल आचरण नहीं अपनायेंगे और वेदानुकूल ईश्वरोपासना तथा धर्माचरण स्वीकार नहीं करेंगे तब तक संसार इसी प्रकार दिग्भ्रमित रहेगा और सही मार्ग न अपनाने के कारण उनका जीवन निरर्थक बना रहेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान किया कि उन्हें अपनी कथनी और करनी के अन्तर को समाप्त कर सत्य को आचरण में लाना चाहिए। जब आर्यों की कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था तब आर्य समाज का लोगों के दिलो और दिमाग पर पूरा प्रभाव था। किन्तु जब इस व्यवहार में कमी आई तो प्रभाव कम होने लगा। अतः इस समय आवश्यकता है कि आर्यजन वेद के प्रचार और प्रसार में मनोयोग से जुटकर कार्य करें।

इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के युवा विद्वान आर्य पुरोहित सभा के महामंत्री डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री वेद प्रकाश भल्ला, कैप्टन अशोक गुलाटी, क्रांतिकारी वैदिक प्रवक्ता श्री ब्रह्म प्रकाश वागीश आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के मंत्री श्री वीरेन्द्र कुमार महाजन ने बड़ी कुशलता के साथ किया। उनके अतिरिक्त श्री अमीरचन्द रखेजा एवं आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश शास्त्री, श्री तुलसीदास नन्दवानी कोषाध्यक्ष, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती चन्द्रप्रभा अरोड़ा, मंत्राणि श्रीमती चन्द्र अरोड़ा, कोषाध्यक्षा क्षमा महाजन ने कार्यक्रम की सफलता के लिए विशेष पुरुषार्थ किया। उपस्थिति एवं वक्ताओं की दृष्टि से कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय तथा सफल रहा।

आर्य समाज मितरौल–औरंगाबाद, जिला–पलवल, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के हुए ओजस्वी व्याख्यान

आर्य समाज मितरौल–औरंगाबाद, जिला–पलवल, हरियाणा का वार्षिकोत्सव 23 से 25 फरवरी, 2018 तक समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी–अलीगढ़ आदि के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री योगेश आर्य के भजनों एवं प्रवचनों का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

25 फरवरी, 2018 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी उत्सव के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उनका माल्यार्पण तथा चित्र भेंटकर भावभीना स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। आर्य समाज के इस तृतीय नियम को केन्द्रित करके अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और समस्त संसार में फैले हुए ज्ञान और विज्ञान का मुख्य स्रोत है। अतः वेदों की ओर लौटने की आवश्यकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज के इतिहास एवं महर्षि दयानन्द के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन में जिन महान विभूतियों ने अपना बलिदान दिया, उनमें अधिकतर वे लोग थे जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदे थे। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, गुरुदत्त विद्यार्थी, शहीदे आजम भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आदि ने महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से ही देशभक्ति का मार्ग चुना था। स्वामी जी ने कहा कि सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार महर्षि दयानन्द सरस्वती के कर कमलों से हुआ। क्रांतिकारी लाला लाजपतराय,महर्षि दयानंद को अपना गुरु और आर्य समाज को अपनी माता मानते थे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त गैरबराबरी और शराब के खिलाफ जनजागरण चलायेगा। महर्षि दयानंद ने कहा था सबको एक जैसी शिक्षा मिलनी चाहिए, शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए उन्होंने कहा पाखंड को मिटाने के लिए आर्य समाज का अभियान निरन्तर जारी रहेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने बलिदानों से प्राप्त आजादी को सुरक्षित रखते हुए देश को पुनः विश्वगुरु का दर्जा दिलाने के लिए त्याग के रास्ते पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज नौजवानों को देश की सेवा के लिए जीवन दान करना चाहिए और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज से जुड़कर आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करना चाहिए।

उत्सव की सफलता के लिए प्रधान श्री शेर सिंह आर्य, मंत्री श्री डालचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष श्री ठाकुर लाल आर्य, उत्साही आर्य कार्यकर्ता श्री राजकुमार चौहान, श्री जगदीश आर्य, श्री भजन लाल आर्य पूर्व सरपंच मितरौल, श्री राजपाल दहिया, श्री राजवीर आर्य, श्री हरदीप चौहान सरपंच, महाशय रूपचन्द, श्री रणजीत सिंह आर्य, श्री जगन सिंह फौजी, श्री घासीराम सुबेदार आदि ने विशेष पुरुषार्थ किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी सर्वश्री श्री चन्द्र आर्य, गिरिराज नम्बरदार, मट्ठर सिंह आर्य, गुरुमेश आर्य, शिव सिंह आर्य एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों ने माल्यार्पण तथा महर्षि दयानन्द का चित्र भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने गाँव के युवा सरपंच को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंटकर आर्य समाज के साथ जोड़ा। मंच संचालन श्री दयालु मुनि वानप्रस्थी, श्री राजकुमार तथा श्री शिव सिंह आर्य ने संयुक्त रूप से किया। विदित हो कि आर्य समाज मितरौल–औरंगाबाद इस क्षेत्र की सक्रिय एवं बहुत पुरानी आर्य समाज है और यहाँ प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव अत्यन्त उत्साह के साथ आयोजित किये जाते हैं।

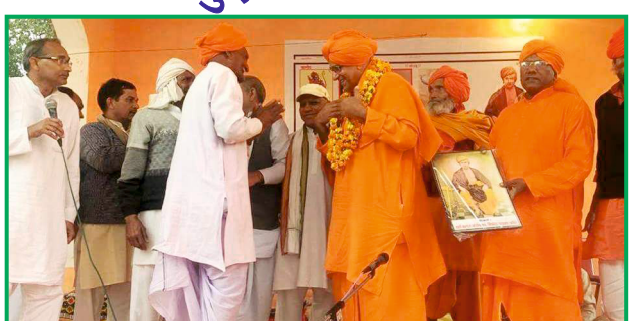

आर्य समाज टिटौली, जिला–रोहतक के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी धाराप्रवाह उद्बोधन से कार्यकर्ताओं में फैली उत्साह की लहर

आर्य समाज टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा के तत्वावधान में 22 से 25 फरवरी, 2018 तक वार्षिकोत्सव का शानदार आयोजन किया गया। उत्सव में आर्य जगत की प्रसिद्ध विदुषी भजनोपदेशिकाओं सुश्री अंजली आर्या, श्रीमती संगीता आर्या एवं श्रीमती कल्याणी आर्या के भजनों की धूम मची रही। इन विदुषी बहनों ने न केवल भजनों से ही बल्कि अपने प्रभावशाली व्याख्यानों से भी जन–सामान्य को अत्यन्त प्रभावित किया। आर्य कन्या पाठशाला के प्रांगण में आयोजित इस त्रिदिवसीय उत्सव का संयोजन एवं संचालन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री दयानन्द आर्य ने किया। उनके साथ उत्साही नवयुवक श्री विकास आर्य एवं श्री सुशील आर्य ने भी अपना पूरा समय देकर सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के प्रधान डॉ. महावीर आर्य, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री जिले सिंह आर्य, श्री जिले सिंह सैनी, श्री कृष्ण कुमार प्रजापति, श्री महेन्द्र सिंह, श्री बलवान सिंह आर्य, श्री नरेश शर्मा व श्री वीरेन्द्र आर्य का विशेष सहयोग रहा।

25 फरवरी का कार्यक्रम श्री वीरेन्द्र आर्य के निवास के सामने खुले स्थान पर आयोजित हुआ जिसमें श्रीमती संगीता आर्या एवं कल्याणी आर्या के भजनों एवं उपदेश का कार्यक्रम चला। इस कार्यक्रम में कुण्डू गोत्र की खाप से जुड़े सैकड़ों गणमान्य महानुभावों तथा आस–पास की कई आर्य समाजों के सदस्यों ने विशेष रूप से भाग लिया। श्री वीरेन्द्र आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश एवं ओ३म् पट्ट देकर विशेष अतिथियों को सम्मानित किया।

आर्य कन्या पाठशाला में आयोजित कार्यक्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला। मनुष्य जीवन में शिक्षा और शिक्षा में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। जब तक हम अच्छे मनुष्य नही बनते तब तक हम ना तो अच्छे डॉक्टर बन सकते हैं, ना ही अच्छे नेता बन सकते हैं, ना ही अच्छे पिता, अच्छे पुत्र व ना ही समाज के अच्छे नागरिक बन सकते हैं। मनुष्य बनने का एक ही रास्ता है वो है संस्कारों का रास्ता।। प्राचीन वैदिक मान्यताओं में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। संस्कारित मनुष्य ही एक ऐसे समाज की स्थापना कर सकता है जिसमे ना भ्रष्टाचार होगा ना मजहब व ना जातिवाद का अस्तित्व होगा।

उन्होंने कहा कि फसल को उगाने के लिए मनुष्य मिट्टी, पानी आदि के टैस्ट आदि करवाता है । परंतु अपनी संतान पैदा करने के लिए उनके पास कोई योजना नहीं होती। उनमें किस प्रकार के संस्कार डालने हैं उसकी किसी को परवाह नहीं होती है। बाद में जब संतान बड़ी होकर माता–पिता और समाज के लिए नासूर बन जाती है तो विलाप करते हैं कि संतान नालायक निकली। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि बच्चा अपनी माँ के गर्भ में संस्कार जन्म से पहले ही ग्रहण करने लग जाता है। इसलिए समाज को उन्नति की तरफ ले जाने के लिए संस्कार युक्त शिक्षा का प्रबंध करना आज के समय अति आवश्यक है।स्वामी जी के व्याख्यान में श्री अनिल आर्य के विद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित हुई। इनके अतिरिक्त बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा एवं संयोजक बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या, मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री गुरुदेव आर्य पानीपत, श्री राजवीर वशिष्ठ एवं श्री रामकुमार आर्य, डॉ. नारायण सिंह, श्री जयभगवान, श्री राजेन्द्र एवं श्री महा सिंह आदि भी सम्मिलित थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष रूप से युवाओं को आर्य समाज से जुड़ने की प्रेरणा दी और उन्हें शंका–समाधान का अवसर भी प्रदान किया। स्वामी जी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपनी सभी शंकाओं एवं प्रश्नों का पहले निराकरण कर लें और उसके पश्चात् आर्य समाज से जुड़कर अपने जीवन का निर्माण करें तो उन्हें किसी भी प्रकार के भ्रमजाल में पड़ने की जरूरत नहीं होगी। स्वामी आर्यवेश जी ने कर्मफल एवं पुनर्जन्म जैसे गम्भीर विषयों को भी अत्यन्त सरल एवं रोचक बनाकर प्रस्तुत किया जिसे श्रोताओं ने विशेष रूप से पसन्द किया।

आर्य समाज के समर्पित एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री विजय कुमार आर्य के देहावसान पर अमृतसर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

आर्य समाज के कर्मठ, अनुभवी एवं समर्पित कार्यकर्ता श्री विजय कुमार आर्य का गत दिनों अमृतसर में देहावसान हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे। विशेष प्रयत्न के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। उनके निधन से पंजाब में आर्य समाज का एक मजबूत कार्यकर्ता चला गया। श्री विजय कुमार आर्य वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य विद्यासभा, हरिद्वार के सदस्य एवं आर्य समाज की विविध गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री और आर्य विद्या सभा के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य के वे अनुज थे और उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्य समाज के कार्यों में विशेष योगदान देते थे। उनके देहावसान के पश्चात् 24 फरवरी, 2018 को महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी सम्मिलित हुए। इसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट, उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता दीनानगर, उपमंत्री श्री तरसेम लाल आर्य बरनाला, एवं अनेक गणमान्य महानुभावों ने श्रद्धांजलि सभा में भाग लिया। सभा का संचालन डॉ. नवीन आर्य ने किया।

स्व. श्री विजय कुमार आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री अश्विनी शर्मा ने उन्हें एक जुझारू तथा कर्मठ कार्यकर्ता बताया एवं उनके सहयोग की विशेष प्रशस्ति की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि लगभग 45 वर्ष पहले विजय कुमार आर्य से उनका परिचय हुआ था। स्वामी जी ने बताया कि 1973 में अमृतसर के हिन्दू स्कूल में आर्य युवक परिषद् की ओर से योग प्रशिक्षण शिविर लगाया गया था जिसमें मैं शिक्षक के रूप में सम्मिलित हुआ था और श्री विजय कुमार आर्य शिक्षार्थी के रूप में अपने साथियों के साथ शिविर में सम्मिलित हुए थे। तब से लेकर अब तक निरन्तर आर्य समाज के कार्यों में वह पूरी लगन एवं चेष्टा से कार्य करते रहे थे। ऐसे अनुभवी एवं कर्मठ कार्यकर्ता का निधन निःसंदेह आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्यजनों को भी प्रेरित किया कि वे आर्य समाज के कार्य में समय देकर स्व. विजय कुमार जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित परिवारजनों को भी अपनी ओर से सान्त्वना दी। इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश आर्य ने विजय कुमार आर्य के अनेक संस्मरण सुनाते हुए भावविह्वल होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उन्होंने कहा कि विजय कुमार जी का निधन उनके लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत बड़ी हानि है। उन्होंने यह भी बताया कि विजय कुमार छाया की तरह उनके साथ रहते थे और आर्य समाज के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेते थे।

होलिकोत्सव और सत्याग्रही प्रह्लाद

— मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

संसार में जीवित प्राणियों में मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। वेदों के अनुसार इस मनुष्य योनि द्वारा वह तप-त्याग और तपस्या द्वारा आवागमन के बन्धन से मुक्त होकर मोक्षानन्द का रसास्वादन कर सकता है। मनुष्य से इतर योनियों के प्राणियों को यह सुविधा, स्वतंत्रता, स्वावलम्बन और स्वाभिमान प्राप्त नहीं है। मोक्षानन्द के लिए सत्यानुरागी, सत्याग्रही होना बहुत जरूरी है।

भारतीय जीवन पद्धति में इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर प्रकृति और परमात्मा के निकट रहने का चिन्तन है। भारतीयों के समस्त आचार और व्यवहार प्रकृति, ऋतुएँ और समयावधि ध्यान में रखकर विभिन्न पर्वों का निर्धारण किया है। जिजी विषा का पर्याय जीवन अर्थात जीवन=जीवन है। वन प्रकृति का ही अंग है। पर्वों का निर्धारण प्रकृति की परिवर्तन शीलता को रखकर किया गया है।

मकर संक्रांति के पश्चात् बसन्त पञ्चमी के स्वागत करने को मन आतुर रहता है। अभी-अभी डेढ़ मास पूर्व बसन्त पञ्चमी के पीलेपन का आनन्द उठाकर पूर्णरूपेण तृप्त भी नहीं हुए थे कि यह होलिका पर्व, नव संस्येष्टि पर्व उत्साहवर्द्धन हेतु उपस्थित हो गया। हमारे भारतीय समाज शास्त्रियों की यह विशेषता रही है कि पर्वों का निर्धारण हो अथवा संस्कारों को सम्पन्न कराने का मंगल अवसर ही हमें आस्तिक भाव रखते हुए परमात्मा के प्रतिपूर्ण आस्था बनाये रखना है। यजुर्वेद के अनुसार ईशावास्य सर्वमिदम्, जगत्याम् जगत। त्येन त्यक्तेन .. ..। अर्थात् परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। यह सब उसकी ही वस्तु है। हमें इन सभी वस्तुओं का उपभोग त्याग भाव से करना चाहिए। नो निडी नो ग्रिडी।

पुरुषार्थ, श्रम, आत्मविश्वास तथा परमेश्वर की कृपा से आषाढ़ी फसल पककर तैयार हो गई है। परिवार, समाज तथा राष्ट्र में इसका उपयोग करने के पहले इसे परमात्मा को सौंपकर तत्पश्चात् यज्ञ शेष, प्रसाद के रूप में इसका ग्रहण करना चाहिए। यज्ञों वै श्रेष्ठ तमं कर्मः अर्थात यज्ञ देव पूजा, संगतिकरण तथा दान द्वारा ही सम्भव है। इसलिए इस नव (नया) सस्य= अन्न को येष्टि=यज्ञ तथा भगवान की पूजा-अर्चना कर तथा धन्यवाद, कृतज्ञता प्रकट कर ही इसका अनुपान करें।

वैदिक काल में इस अवसर पर प्रत्येक कृषक के यहाँ नव-संस्येष्टि यज्ञ हुआ करते थे। इसे सामूहिक रूप से भी मनाया जाता था।

महर्षि दयानन्द के बोधोत्सव का सन्देश अथवा दूसरे शब्दों में कह सकते हैं, क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द और उनका दिव्य सन्देश भी तो यही है। सामूहिकता ही आनन्ददायी जीवन है, सामाजिकता ही आवरण और आचरण है।

सामूहिक आनन्द की महिमा न्यारी है। ग्रामों में सामूहिक रूप से किया जाने वाला यह नव संस्येष्टि यज्ञ ही वर्तमान 'होलिकोत्सव' का अपभ्रंश रूप है। विदेशों में भी कृषक 'न्यू इयर्स डे' अथवा सेंट वेलन्टाइन डे को भी सामूहिक रूप से मनाते हैं। विदेशी संस्कृति में 'काम' का सामाजीकरण अभी तक नहीं हो पाया। भारतीय समाजशास्त्रियों ने 'काम' को चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से काम का सामाजीकरण करके पारिवारिक रूप प्रदान कर इसे 'विवाह' नामक संस्था में स्वीकृत किया। इतना ही नहीं हमारे वैदिक 16 संस्कारों में इसे 13वाँ संस्कार अंगीकृत कर सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। यही कारण है कि पश्चिमी सभ्यता विज्ञान के कारण कितनी ही उन्नत हो गई हो, परन्तु संस्कारों के अभाव में यह पाश्चात्य सभ्यता बहुत ही पिछड़ी हुई है। दयनीय है।

कृषि प्रधान देश होने के कारण हमारे यहाँ आषाढ़ी फसलों के यवों (जौओं) से देवयज्ञ (हवन) करने के लिए इस नये अन्न की आहुति देकर परमात्मा के प्रति कृतज्ञता तथा उसकी कृपा की अपेक्षा के विचारों से जौ की आहुति दी जाती है। यज्ञ के शाकल्य में जौ का आटा ही मिश्रित किया जाता है।

संस्कृत में अग्नि में भूने हुए अर्ध पक्व अन्न को 'होलक' कहते हैं शब्द कल्पद्रुम कोष के अनुसार -

तृणाग्नि भृष्टार्द्ध पक्वशमी धान्यं होलकः। होलाइति हिन्दी भाषा। अर्थात् तिनकों की अग्नि में भुने हुए अधपके शमीधान्य (फली वाले) अन्न को 'होलक' (होला) कहते हैं। यह होला स्वल्पवात है और मेद (चर्बी) कफ और श्रम (थकान) के दोषों का शमन करता है। यह सर्व विदित है कि ग्रीष्म ऋतु में सत्तू का विशेष उपयोग किया जाता है। देवयज्ञ के पश्चात् यह प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। क्योंकि श्रुति कहती है - केवलाधो भवति केवलादी अर्थात अकेला खाने वाला केवल पाप खाने वाला है। बाँटकर खाओ। चौके में माँ पहली रोटी गाय के लिए बनाती है।

भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या?

सबसे पहले पूछ कर फिर खाना तू खाया कर।

हमारा यह पर्व होलीपर्व सामाजिक एकता सामाजिक सशक्तिकरण का पर्व है। इसमें समाज के सभी वर्गों, समुदायों, समूहों के व्यक्तियों को एक साथ बैठाकर सामाजिक ऐक्य का आनन्द उठाया जाता है। विगत समय यदि कारण वश कोई भूल या अपराध हो गया हो तो इस आनन्दोत्सव पर उसे क्षमा कर प्रसन्न हृदय से गले लगाया जाता है। इस स्थान पर यह ध्यान रखना है कि समाज की महिला वर्ग का पूरा सम्मान करते हुए श्रद्धा सहित उनके साथ शिष्टता का व्यवहार किया जाये। यह देश राम और लक्ष्मण का देश है। अनुज लक्ष्मण अपनी भाभी सीता का अत्यधिक सम्मान करते थे। उनकी दृष्टि केवल सीता जी के चरणों तक सीमित रही। उन्होंने कभी भी सिर से लेकर घुटनों तक कभी नहीं निहारा। राम के द्वारा पूछने पर लक्ष्मण ने यह कहा था-

नाहमं जानामि केमूरे नाहं जानामि कुण्डले।

नुपरे तु विजानामि नित्यं पादाभि वन्दनाम्।। वाल्मीकि रामायण 6/134

ऐसी शानदार है हमारी भारतीय संस्कृति, जिसमें नारी को प्रतिष्ठित किया है। यज्ञों में नारी को ब्रह्मा बनाया जाता है।

दुर्भाग्यवश आधुनिक भारतीय युवक पश्चिमी भोगवादी संस्कृति से प्रभावित होकर सुरा-सुन्दरी का भक्त बनता जा रहा है। नशा चाहे किसी भी वस्तु का हो, वह सर्वप्रथम बुद्धि का नाश करता है और बाद में शरीर का। नशा अर्थात् नाश। भ्रमवश आधुनिक भारतीय युवतियाँ भी युवकों से पीछे नहीं हैं। ध्यान रहे, यह कौशल्या, सुमित्र, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई का देश है। इनके जीवन द्वारा भारतीय युवतियों को सशक्तिकरण की ओर मुड़ना चाहिए।

इस अवसर पर यदि हिरण्यकश्यप, होलिका और भक्त प्रहलाद की चर्चा न करें, तो सब व्यर्थ हो जायेगा। पुराणों के अनुसार हिरण्यकश्यप शिव का और प्रहलाद विष्णु का भक्त था। शैव नहीं चाहते थे कि उनके घर और राज्य में विष्णु की पूजा भक्ति की जाये। फिर क्या, पिता और पुत्र का संघर्ष चला। शास्त्रों के अनुसार पुत्र को अपने पिता को आदर्श मानकर उसका अनुकरण करना चाहिए। परन्तु तैत्तरीय उपनिषद् में यह भी कहा है -

'यदि पिता अनुचित आदेश दे तो उसकी नम्रता पूर्वक अवज्ञा कर देना चाहिए। गुरु को आदर्श मानते हुए भी गुरु के किसी दोषपूर्ण आचरण को स्वीकार नहीं करना चाहिए। 'बस भक्त प्रहलाद ने विष्णु का भक्त बने रहकर अपने अत्याचारी पिता की आज्ञा की अवहेलना विनम्रता पूर्व की। उसने पिता का प्रतिकार नहीं किया। प्रहलाद सत्याग्रही था इस कारण सहिष्णु, निर्भीक तथा आत्मा की अमरता में विश्वास करता हुआ परमात्मा के प्रति आस्थावान् था यद्यपि हिरण्यकश्यप ने उसे मारने के कई उपाय किये, परन्तु वह असफल ही रहा। अन्त में उसने अपनी छोटी बहन होलिका की सहायता से अग्नि में बैठाकर प्रहलाद को जलाकर मारने का षड्यन्त्र किया। 'हारेगा हरामी' के अनुसार बालक प्रहलाद जिन्दा बच गया और बुआ जी जलकर राख हो गई। परमात्मा न्यायकारी (अर्यमा) है।

प्रहलाद के इस पावन चरित्र से इस स्वतंत्र भारत के युवा वर्ग को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। उन्हें सत्य को ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने को सदैव तत्पर रहना चाहिए। युवा बलवान, राष्ट्र बलवान।

आज देश को स्वतन्त्र हुए 64 वर्ष हो गये हैं। देश की 32 प्रतिशत युवा शक्ति आदर्शों के अभाव में किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रही है। भारत के इतिहास में सैकड़ों युवाओं अर्जुन, अभिमन्यु, राम, कृष्ण, लवकुश, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, सुभाष चन्द्र बोस तथा वीर सावरकर, बालक मूल शंकर (दयानन्द) ईश्वर चन्द्र, विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द जैसे अनेक आदर्श युवाओं के जीवन प्रस्तुत हैं। इनसे ही प्रेरणा प्राप्त कर देश का युवा वर्ग अपने देश को संसार में सर्वश्रेष्ठ बनाकर दिखा सकते हैं। केवल संकल्प की आवश्यकता है। इस मंगलमय अवसर पर देश के युवा वर्ग से ऐसी ही अपेक्षा है कि भारत की संस्कृति और सभ्यता के अनुसार अपने जीवन को पवित्र और सात्विक बनायें। ओ३म् शम्।

'सुकिरण' अ/13, सुदामानगर, इन्दौर-452002 (मध्य प्रदेश)

होलिकोत्सव हम मनाते ही रहे

-डॉ. (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी

यह परस्पर की विषमता बढ़ रही, होलिकोत्सव हम मनाते ही रहे।
यज्ञमय वह भावना मिलती नहीं, ज्योति भी संकल्प की जलती नहीं।
व्यक्त हैं उपलब्धियों के लिए, किन्तु आकृति जो वरद, हंसती नहीं।
भ्रांति का है जाल जब उलझा रहा, बना अलशित पग बढ़ाते ही रहे।
कृप्रथाएं कर रही जर्जर सतत्, पशु-मनुज में अब नहीं अन्तर रहा।
है मनन के नाम पर क्या शेष अब, बुझ गए विश्वास दीपक ने दहा।
हारते आए सभी संग्राम जब, किस विजय के गीत को गाते रहे?
पंगु और अन्धे सभी हैं दीखते, आज वे घर से बने सब भीगते।
अब सरे बाजार प्रहरी लूटते, मौन होकर हम सभी हैं खीझते।
स्नेहमय वे रंग सब विस्मृत हुए, द्वेषमय पिचकारियाँ भरते रहें।
छल रही आतंकवादी होलिका, जल रहा प्रहलाद सबके सामने।
रक्त देकर के खिलाया जो चमन, चल रहे बन अन्ध उसको बांटने।
घोर उत्पीड़न निजी घर में पला, आग बाहर की बुझाते ही रहे।
साध पाये हित नहीं निज का अभी, देश हित का ध्यान कैसे हो कभी।
ऊर्जा का विश्व संकट छा गया, किन्तु ईधन दाह करते हम सभी।
प्रेरणा शिव की अपरिचत ही रही, पाठ शुक के बस यहाँ चलते रहे।

- प्रो. कोलोनी, श्यामगंज, बरेली-5

स्वस्थ राजस्थान स्वस्थ भारत अभियानान्तर्गत 'होली दहन बने हवन' हो विषाणु दमन, हेतु व्यापक जन जागरण अभियान
सार्वदेशिक सभा अंतरंग व आर्यमहासम्मेलन देहली मे मिला व्यापक समर्थन दस हजार पत्रक वितरित

जयपुर, मानव निर्माण एवं विश्व शान्ति संस्थान व स्वाइन फ्लयू निवारण यज्ञ समिति द्वारा स्वस्थ राजस्थान स्वस्थ भारत अभियानान्तर्गत होली दहन बने हवन हो, विषाणु दमन हेतु व्यापक जन जागरण अभियान चलाया हुआ है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने वताया कि हमारे अभियान से होली दहन सामूहिक नवसंश्येष्टि यज्ञ जो नये अन्न को ''देवताओं के मुख'' अग्नि को समर्पित करने की वैज्ञानिक परिपाटी रही है। इसे जनता समझने लगी है। यश ने बताया कि सार्वदेशिक सभा की अंतरंग मे व आर्यमहासम्मेलन देहली मे अभियान को व्यापक समर्थन मिला है तथा दस हजार पत्रक वस व रेलवे स्टेशन पर वितरित किये गये हैं।

सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अभियान का महत्व बताते हुए जन कल्याण कार्यक्रम की सराहना की। स्वामी अग्निवेश जी, डॉ. अनिल आर्य, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, अनेक सन्यासी आर्य नेताओ ने 'स्वास्थ्य किट बैग' का विमोचन भी किया।

यश ने वताया कि राजस्थान सरकार को इसे सरकारी स्तर पर कराने हेतु एक करोड मे हजारो करोडो की उपयोगिता योजना हेतु दिये ज्ञापन पर आयुर्वेद बोर्ड परीक्षण कर रहा है। उक्त विचार शासन सचिव ने पत्र द्वारा अवगत कराया है।

आर्य महिला सभा, अमृतसर की गतिविधियाँ

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य महिला सभा, अमृतसर की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी के नेतृत्व में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी ही श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बहनों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। बहनों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के ऐतिहासिक क्षणों का गुणगान करते हुए भजनों द्वारा सुन्दर प्रस्तुति दी। इस अवसर पर माता जगदीश आर्या जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने अपना सारा जीवन समाज सेवा में अर्पित कर दिया। उन्होंने भारत में गुरुकुल व्यवस्था शुरू करने, दलितों का उद्धार करने, लाखों लोगों की घर वापसी करवाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने जामा मस्जिद, दिल्ली के मिम्बर से वेद मंत्र उच्चारण करके भारी संख्या में उपस्थित मुसलमानों को अपने व्याख्यान से लाभान्वित किया था। चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजों के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले स्वामी जी के जीवन पर माता जी ने विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्त में माता जगदीश आर्या ने सभी का धन्यवाद अर्पित किया। प्रसाद वितरण के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– निवेदक आर्य महिला सभा, अमृतसर

गायत्री महायज्ञ द्वारा मनाया गया मकर संक्रांति का महापर्व

आर्य महिला सभा, अमृतसर की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी के नेतृत्व में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मकर संक्रांति का पर्व और 7वीं भजन संन्ध्या का आयोजन गायत्री महायज्ञ के द्वारा बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। बगीची खुशीराम चौक, लक्ष्मणसर में 14 जनवरी, 2018 को प्रातः 11 से 2.30 बजे तक मकर संक्रांति के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री विजय कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया। श्री जगत वर्मा, शिवानी जी, साक्षी जी, माधुरी जी, महक जी ने अपने मनमोहक संगीत लहरी में मधुर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अरविन्द मेहता जी, श्रीमती मधुर भाषिणी जी सेक्रेटरी डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवाखां, दीनानगर, पंजाब तथा महन्त रमेशानन्द जी चेयरमैन ऑल इंडिया एंटीकरप्शन पंजाब, श्री सतीश जी अग्रवाल, प्रिं. कमलेश शर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ऑल इंडिया एंटीकरप्शन पंजाब के सेक्रेटरी श्री जुगल महाजन विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त श्री पदम मेहरा जी, श्री सुधीर ठुकराल जी, श्रीमती विजय कपूर जी, श्रीमती रमा मित्तल जी, श्री जवाहर लाल जी दुग्गल, श्री जनकराज जी दुग्गल, श्रीमती स्वराज ग्रोवर, श्री दीपक बब्बर, श्रीमती निर्मला शर्मा आदि ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। यज्ञ के पश्चात् जलपान और कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम के अन्त में माता जगदीश आर्या जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

– निवेदक आर्य महिला सभा, अमृतसर

!! ओ३म् !!

महर्षि दयानन्द जी

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा-स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश जी

11वां बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : **मंगलवार 27 फरवरी 2018** से **रविवार 11 मार्च 2018** तक

स्थान : **स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)**, ग्राम-टिटौली, जिला रोहतक (हरि0)

समय : प्रतिदिन प्रात: **8:00 बजे** से **11:00 बजे** तक, **सायं 3:00 बजे** से **6:00 बजे** तक ।

ब्रह्मा
स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)
ग्राम टिटौली, जिला-रोहतक (हरि0)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

मुख्य आकर्षण

- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
- महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
- स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
- कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री-पुरूष, छात्र एवं छात्राएं आहूति देकर कन्या भ्रूणहत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरूद्ध संकल्प लेंगे।

विशेष : महायज्ञ मे उच्च कोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यज्ञमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी भी महायज्ञ में आहूति डालकर राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक : **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्**
एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन व युवा निर्माण अभियान

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) ग्राम टिटौली, जिला रोहतक (हरि0)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772

माता जगदीश आर्या जी का 88वाँ जन्मदिवस

समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य महिला सभा अमृतसर की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी का 88वाँ जन्मदिवस 30 नवम्बर, 2017 को उनके निवास स्थान पर बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित बहनों ने मिलकर मधुर स्वर से भजन गाये तथा माता जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की कामना की। मुख्य वक्ता श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने माता जी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उन्हें आर्य समाज का प्रमुख स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि माता जी ने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में व्यतीत किया हुआ है। उन्होंने उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए प्रभु से प्रार्थना की। कार्यक्रम के अन्त में माता जी ने उपस्थित सभी बहनों का धन्यवाद किया। माता जी के जन्मदिवस के साथ ही इस अवसर पर श्री विजय कुमार शास्त्री जी की शादी की साल गिरह भी मनाई गई। प्रसाद तथा जलपान के उपरान्त यह सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– आर्य महिला सभा, अमृतसर

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है (डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को
दिल्ली में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

हुड्डा कुश्ती अकादमी द्वारा ग्राम–किलोई, जिला–रोहतक, हरियाणा में कुश्ती प्रतियोगिता का किया गया विशेष आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिया पहलवानों को आशीर्वाद

गत् 16 फरवरी, 2018 को हुड्डा कुश्ती अकादमी, ग्राम–किलोई, जिला–रोहतक के प्रांगण में कुश्ती प्रतियोगिता का विशेष आयोजन अकादमी के संचालक श्री ओम पहलवान तथा श्री मुकेश हुड्डा के प्रयास से किया गया। प्रतियोगिता में पुरुष पहलवानों के अतिरिक्त महिला पहलवानों की भी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पहलवानों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान मंच का सफल संचालन श्री सुनील शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ किया। विदित हो कि श्री सुनील शास्त्री भी अपनी कबड्डी अकादमी चलाते हैं और प्रतियोगिताओं का उन्हें विशेष अनुभव है। प्रतियोगिता में प्रसिद्ध कुश्ती कोच श्री रणवीर सिंह ढाका कई महिला एवं पुरुष कुश्ती कोचों के साथ उपस्थित थे जिसके कारण कुश्तियों का निर्णय अत्यन्त निष्पक्षता के साथ किया गया।

इस प्रतियोगिता में मुख्यअतिथि के रूप में जिला परिषद् के चेयरमैंन श्री बलराज कुण्डू पधारे और उन्होंने पहलवानों को अपने उद्बोधन से प्रेरणा दी। आशीर्वाद प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा सभी पहलवानों एवं आयोजकों को उन्होंने विशेष बधाई देकर इस सफल आयोजन के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिता की अन्तिम कुश्ती के लिए छटे हुए पहले पुरुष पहलवानों के हाथ

मिलवाकर तथा उसके पश्चात् महिला पहलवानों के हाथ मिलवाकर स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री बलराज कुण्डू ने कुश्ती प्रारम्भ करवाई। इस प्रकार इस पूरे कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति से पहलवानों को सदाचार, संयम, सात्विक विचार एवं सात्विक भोजन की भी प्रेरणा प्राप्त हुई। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में पहलवानों को उपरोक्त बिन्दुओं पर विशेष मार्गदर्शन देकर शाकाहारी भोजन तथा सदाचारी जीवन का संकल्प दिलवाया।

आयोजकों ने स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री बलराज कुण्डू को शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।